Name- ANIK
ANSHUMAN
Class- 8B
SCHOOL NO.4220

10 निय

कर्ण का मित्र-प्रेम

क → कर्ण कृष्ण कि ऋणी है।

ख → सूरपुर.

ग- तन, मन, धन कर्ण अपने मित्र को समर्पित किया है।

घ- कवि के अनुसार मित्र धर्म श्रेष्ठ है।

2- हे श्रेष्ठी कर्ण का रोम-रोम
जानते सत्य यह सूर्य-सोम
तन, मन, धन दुर्योधन का है।
यह जीवन दुर्योधन का है,
सुरपुर से भी मुख मोड़ूँगा
केशव, मैं उसे न छोड़ूँगा।

उ- योग - योग श्रेणी होने का अभिप्राय है कि भक्ति में लीन होना।

कर्ण ने दुर्योधन को तरह समान कहा क्योंकि उन्होंने उनकी बहुत मदद की।

Date
Page

क → हाँ अपने सच्चे मित्र कि हर बात मानना ठीक है क्योकी वह हमारी भलायी के बारे मे हमसे सोचता रहता है। और वह दुर्योधन के हर बात मानते थे क्योकि उनहोंने उन्हे समाजमे सम्मान दिलाया था।

उ- मित्रता की तुलना किसी से नहीं
की जा सकती क्योंकी एक
सच्चा मित्र हमेशा बिना किसी
स्वार्थ के हमारे साथ रहता

कर दिया था क्योंकि दुर्योधन ए
सच्चा मित्र था और एक स
मित्र हमेशा हमारि भलाइ सोच
है ।